संरक्षण की बाट जोह रहा है जनजातीय चिकित्सा पद्धति की जड़ी-बूटियों का संसार

संजय कृष्ण ● रांची

लगभग 70 साल के जनजातीय वैद्य सुकरा बेदिया झारखंड के रामगढ़ जिले के जंगलों से घिरे कोरांबे गांव में रहते हैं। सुकरा को जंगली जड़ी-बूटियों का अच्छा ज्ञान है। उन्हें पता है कि सांप के काटने पर कौन सी जड़ी का प्रयोग करना है या पथरी के इलाज के लिए कौन सा पौधा उपयोगी है।

सुकरा कोरोनाकाल की भयावहता के बारे में बताते हैं कि उस दौरान हमारे पास काफी मरीज आते थे और वे ठीक होकर जाते थे। वह कहते हैं कि गांव में हम साल में कई बार हवन करते हैं और इसमें करीब 108 प्रकार की जड़ी-बूटियां डालते हैं। हवन के धुएं से कई तरह की बीमारियां दूर होती हैं। हर जनजातीय समुदाय के पास इलाज की अपनी एक पारंपरिक पद्धति है। यह बात और है कि किसी ने इनके बारे में वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने की कोशिश नहीं की। सुकरा के बेटे दिनेश्वर स्नातक हैं। वह पिता की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। दिनेश्वर कहते हैं, हमारे दादा 120 साल तक जिए, लेकिन हमने उन्हें कभी दवा लेते नहीं देखा।

इसी तरह रामगढ़ जिले के कुंदरू खुर्द के मुकुल मुंडा भी आदिवासी वैद्य हैं। वह भी जड़ी-बूटियों से तरह-तरह की बीमारियां ठीक करते हैं। वह कहते हैं, यह पूर्वजों की थाती है साथ ही यह भी जोड़ते हैं कि आदिवासी वैद्यों को भी सर्टिफिकेट मिलना चाहिए।

सुकरा बेदिया

मुकुल मुंडा

कई बीमारियों में काम आती है जंगली जड़ी

- झारखंड में औषधीय पौधों की भरमार है, लेकिन शोध की व्यवस्था नहोनेसे इनका उपयोग मरीजों के इलाज में नहीं हो पा रहा है
- नई पीढ़ी की रुचि बढ़ेगी तो जनजातीय चिकित्सा पद्धति का विस्तार होगा। इस दिशा में पीरामल फाउंडेशन कर रहा है सार्थक प्रयास

बीते दिनों दिल्ली में आयोजित नेशनल आयुष मिशन कान्क्लेव में झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने कहा था कि प्रदेश में औषधीय पौधों की भरमार है, लेकिन शोध की व्यवस्था न होने से मरीजों के इलाज में इनका उपयोग नहीं हो पा रहा है। केंद्र सरकार यदि राज्य में एक अनुसंधान केंद्र स्थापित कर दे तो हमारी ज्ञान परंपरा को पंख लग सकते हैं और हजारों साल से इलाज की जो मौखिक परंपरा चली आ रही है, उसे एक वैज्ञानिक स्वरूप मिल सकेगा।

इस दिशा में पीरामल फाउंडेशन काफी काम कर रहा है। वह राज्य के आदिवासी वैद्यों को एक मंच पर ला रहा है साथ ही जड़ी-बूटियों से ठीक हुए मरीजों और कौन सी जड़ी-बूटी कितनी कारगर रही, इसका विवरण तैयार करवा रहा है। फाउंडेशन से जुड़े लोगों का कहना है कि पुरानी पीढ़ी के समृद्ध ज्ञान का यदि उपयोग नहीं किया गया तो जनजातीय चिकित्सा पद्धति धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगी। फाउंडेशन हर्बल गार्डन तैयार करने की भी योजना बना रहा है कि ताकि युवा पीढ़ी में जड़ी-बूटियों के प्रति रुचि बढ़े।